Vol. 6, Issue. 1, (January 2017) pp. 48-51 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

संगीत में ताल के सहयोग से रसाभिव्यक्ति

डा0 विपुल पाण्डेय
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
Email– dr.vipulpandey@gmail.com

भारतीय संगीत वाड्मय में सौन्दर्यतत्व संगीत का सारतत्व है। संगीत का मुख्य उद्देश्य सौन्दर्य एवं आनंद का निर्माण करना है। संगीत में रसानुभूति तथा सौन्दर्यबोध दोनों का अर्थ एवं उद्देश्य समान है। मनुष्य के ह्रदय में स्थायी भाव सदैव विद्यमान होते हैं, उन भावों के उद्दीपन से ही रस उत्पन्न होता है और इस रस से कलाजन्य सौन्दर्य की अभिव्यक्ति होती है। संगीत के सौदर्न्यशक्ति के द्वारा प्राणी के स्थायी भावों को जगाकर उसे रसमग्न कर देना कलाकार का लक्ष्य होता है। रस का परिपाक, सिद्ध कलाकार की प्रवीणता का परिचायक होता है। संगीत का सौन्दर्य राग, ताल, लय एवं गीत के अलावा काकुभेद पर भी निर्भर है।

ताल वाद्यों की भूमिका रसभाव की निष्पत्ति में प्राचीन काल से ही रही है। आचार्य भरत कृत 'नाट्यशास्त्र' तथा शारंगदेव कृत 'संगीत रत्नाकर' में निश्चित रसभाव को उत्पन्न करने वाले अलग–अलग प्रयोजनों हेतु अलग–अलग अवनद्ध वाद्यों को बजाने पर बल दिया गया है। इसी क्रम में आचार्य भरत ने कुतप विन्यास में लय – ताल वाद्यों – मृदंग, पणव व दर्दुर का उल्लेख किया है। नाट्यशास्त्र में ही मृदंग वादन को सौन्दर्ययुक्त बनाने के लिये उसे विशेष गुणों से सम्पन्न होने का भी निर्देश दिया है :–

स्फुटप्रहारं विशदं विभक्तं
रक्तमं विकृष्टं करलेपनं च।।
त्रिमार्जनापूरितरागम्यं
मृदंगवाद्यं गुणतो वदन्ति।।1

अर्थात् मृदंगवाद्य की ध्वनि स्पष्ट, विस्तृत एवं भव्य हो तथा विभाग, मात्राओं आदि का आघात स्पष्ट हो, रंजक हो तथा उचित रूप से बनी हो, आनंदप्रद स्वर में मिली हुई हो।

इसी प्रकार संगीत रत्नाकर में ताल की व्याख्या इस प्रकार दी गई है–

तालस्तलप्रतिष्ठायामिति धातोर्धत्रि स्मृतः।
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठितम्।।2

अर्थात् ताल शब्द की व्युत्पत्ति 'तल' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है– आधार अथवा प्रतिष्ठापक गीत, वाद्य तथा नृत्य तीनों ही ताल पर प्रतिष्ठित होते हैं।

संगीत में ताल विधान का प्रधान लक्ष्य सदैव से गायन, वादन एवं नृत्य की संगत करना रहा है। प्रचलित उत्तर भारतीय तालों की रूपरेखा की अगर हम बात करें तो ताल की रचना के सिद्धांत यथा मात्रा, संख्या, विभाग निर्णय, ताली–खाली का निर्णय, बोलों का चयन आदि गीत विधा के अनुरूप रहकर ही सौन्दर्य का निर्माण करते हैं।

भारतीय ताल वाद्यों में ध्वनि, वादन, तारता, तीव्रता, मधुरता, गम्भीरता आदि गुणों की दृष्टि से विविधता पाई जाती है, जिससे अनेक भावों से युक्त गीतों के संगत हेतु उस रसभाव के समान ध्वनि एवं लययुक्त अवनद्ध वाद्यों से ताल एवं लय का प्रयोग संगीत में सौंदर्यतत्व के पूर्णरूपेण उभर कर सामने आने हेतु एक प्रमुख कारक है।

संगीत में रस–भाव के पूर्ण निष्पत्ति, ताल में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न बोलों के ध्वनि प्रभाव द्वारा भी सम्भव है। ध्रुपद आदि गायन के साथ खुले तथा जोरदार बोलों का प्रयोग तथा ख्याल जैसे श्रृंगार प्रधान गीतों के साथ चाटी के नरम बोलों का प्रयोग इसके अच्छे उदाहरण हैं।[3] ताल के बोलों का संगीत के रसभाव में कितना प्रभाव पड़ता है यह उक्त उदाहरण से भली–भॉति दृष्टिगोचर होता है कि ध्रुपद गायन में उसकी गम्भीर प्रकृति को देखते हुए चारताल का निर्माण किया गया है तथा ख्याल जैसी श्रृंगार प्रधान गायन शैली के अनुरूप एकताल की रचना की गयी है। इसकी हम स्वतः ही कल्पना कर सकते हैं कि यदि ध्रुपद गायन में एक ताल का वादन हो तथा ख्याल गायन शैली में चारताल का तो इससे जिस रस–भाव की निष्पत्ति सम्भव है, उसका क्या हो ? इसीलिये गीत विधा के अनुरूप ही ताल के वर्णों का चयन, जिससे गीत विधा का सौन्दर्य भी प्रतिष्ठित हो, के परिणामस्वरूप ही ठुमरी जैसी कोमल प्रकृति की गायन–शैली के लिये निर्धारित तालों में अवग्रह अथवा वर्ण–शून्य मात्रा का आर्विभाव करके ठेके को अत्यंत कोमल बनाने की चेष्टा की गई है।[4]

संगीत को ताल द्वारा लयबद्व किया जाता है शास्त्रीय कण्ठ संगीत में ध्रुपद, धमार, ख्याल ठुमरी, ठप्पा, तराना, चतुरंग आदि प्रकारों के साथ विभिन्न या समान मात्राओं के तालों का विभिन्न लयों में प्रयोग किया जाता है। गीत प्रकारों के रस–भाव निष्पत्ति में लय का बहुत महत्व होता है। यद्यपि 'तराना' में शाब्दिक अर्थ न होते हुए भी केवल स्वर–बद्व रचना लयकारी एवं ताल–वादक की कुशलता द्वारा हृदय को आनन्द प्रदान करती है।

गायक या वादक अपनी कला के प्रदर्शन में सर्वप्रथम मुक्त रागालाप, जोड़ालाप, तान, झाला आदि से प्रारम्भ करता है। यद्यपि इस प्रदर्शन में लय होती है, किन्तु जब वही, गायन–वादन ताल वाद्य द्वारा लय में परिणामबद्ध हो जाता है तो वही कला अतिरंजक तथा आहलादक् बन जाता है। लय का सम्बन्ध गति से होता है, गति का सम्बन्ध समय (काल) से होता है समय को नापने के लिये क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है, दो क्रियाओं के मध्य को मात्रा कहा गया है और इन्हीं क्रियाओं तथा मात्राओं द्वारा तालों का निर्माण होता है, जिससे गति या गत को निबद्व किया जाता है, जिससे संगीत रंजक होता है।

'संगीतोपनिषद् सारोद्धार' में आचार्य सुधाकलश ने लिखा है –

गीतं वाद्यं तथा नृत्यं तालवर्जं न शोभते।
तालाभावान्न मेलः स्यादमेलादत्यवस्थिति।
न रंगमत्यवस्थातो बिना रंगं कुतो लयः
लयं विना न सौख्यं स्यात् तन्मूलं ताल ऊच्यते।।[5]

अर्थात् गायन, वादन तथा नृत्य ताल के अभाव में शोभित नहीं होते। बिना ताल के मेल (मिलन–आनंद) सम्भव नहीं। इस प्रकार बेमेल से लय उत्पन्न नहीं होती (यहॉ लय शब्द का अर्थ 'लीयते यस्मिन्' अर्थात् लीन हो जाने से है) लय बिना सुख नहीं जो ताल से प्राप्त होती है।

हम प्रायः देखते हैं कि जब तक गायक या वादक अपना प्रस्तुतिकरण अनिबद्व रूप में करता है अर्थात् रागालाप, जोड, जोड़ालाप, झाला, ताने आदि बिना निश्चित लय के, ताल के, प्रस्तुति करता रहता है तो श्रोतागण स्तब्ध होकर अचेतक के रूप में सुनते रहते हैं। जैसे ही तालवाद्य की थाप के साथ गायन या वादन एक निश्चित लय में प्रारम्भ होता है तो श्रोता रसपान के लिए सजग हो जाते हैं।[6] लय द्वारा संगीत में विभिन्न रसभाव पूर्ण व चलन शैलियों का निर्माण होता है गतिभेद उत्पन्न कर अलग–अलग रसों की निष्पत्ति की जाती है। लय संगीत को ताल के माध्यम से स्थाई, सुन्दर, उपयोगी, रसपूर्ण एवं मनोरंजक बना देती है। करूण, श्रृंगार, रौद्र, विभत्स आदि रसोत्पत्ति में ताल की विभिन्न लयों का बड़ा महत्व होता है। ताल एवं लय द्वारा गायक या वादक की कला मौलिक तत्वों से समन्वित होकर कई गुना अधिक प्रभावोत्पादक तथा समृद्ध होती है। ताल की इन्हीं चलन शैलियों द्वारा 'ठुमक चलत रामचन्द्र' जैसे गीतों में ठुमकना को साकार कर रसोत्पत्ति सम्भव हो पाती है।[7] लय की शान्ति रस प्रधान चयन शैली, श्रृंगारिक रसप्रधान चयन शैली, वीर रौद्ररस प्रधान चलन शैली गीत के शब्दों के रसाभाव को एकदम स्पष्ट कर देती है। तालात्मक तथा लयात्मक मर्यादा के कारण संगीत शैलियों में असंयमित प्रदर्शन नहीं हो पाता और रस तथा भावों का सौंदर्य बना रहता है इसी कारण लय को संगीत में पिता (संरक्षणकर्ता) की उपमा दी है।

संगीत में नृत्य एक ऐसी कला है जिसकी भावाभिव्यक्ति एवं रस निष्पत्ति नृत्यकार के भाव तथा पैरों द्वारा की जाने वाली लय के अनुसार तालवादन से ही सम्भव हो सकती है यदि नर्तक की लय एवं तालवादक की लय में भिन्नता आ जाए तो रसभाव ही नहीं आनन्द भी प्राप्त नहीं होगा।[8]

हम देखते है कि गायक या वादक के स्वरोच्चारण के तीव्रता तथा तारता के अनुरूप तालवाद्य वादक भी विशिष्ट बोलों द्वारा ध्वनि का निकास करता है तो रसभाव में दुगुनी वृद्वि होकर श्रोतागण आनंदित हो उठते हैं। ताल के बोलों का रसोत्पत्ति पर कितना प्रभाव पड़ता है वह ध्रुपद के 12 मात्रक ताल चौताल से देखिए। ध्रुपद की कथावस्तु गम्भीर होने के कारण इस ताल में धा धा । दिं ता। किट धा। दिं ता। तिट कत। गदि गन। इन बोलों का खुले वादन से प्रयोग किया जाता है। यदि हम ध्रुपद गायन के साथ 12 मात्रक एक ताल के बोल बजाएंगे तो क्या ध्रुपद का गम्भीर स्वरूप कायम रह सकेगा ? निश्चित् नहीं। उसी प्रकार किसी श्रृंगार रस प्रधान 12 मात्रक गीत के साथ चौताल के ठेके का वादन करेंगे तो क्या उस बोल से श्रृंगार रस की अनुभूति होगी। निश्चित ही नहीं।[9]

उपरोक्त उद्धरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि संगीत में ताल के सहयोग से ही रसाभिव्यक्ति संभव है। बिना ताल के कोई भी संगीत चाहें शास्त्रीय संगीत हो या लोक संगीत मानव चित्त पर कोई भी प्रभाव नहीं उत्पन्न कर सकता है और जो संगीत मानव चित्त पर प्रभाव नहीं डाल सकें वो संगीत ना होकर शोर–गुल माना जाता है, ऐसा शास्त्रोक्त वर्णन भी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1) आचार्य भरत कृत 'नाट्यशास्त्र' प्रकाशक, ओरियन्टल् इन्स्टीट्यूट, बड़ौदा, अध्याय–34
2) पं0 शारंगदेव कृत 'संगीत रत्नाकर' सम्पादक एवं प्रकाशक– प0 एस. सुब्रमण्यम् शास्त्री, अद्यार, चेन्नई, तालाध्याय श्लोक–2
3) मनोहर भालचन्द्रराव मराठे कृत 'ताल वाद्य शास्त्र' प्रकाशक, शर्मा पुस्तक सदन, पाटनकर बाजार, लश्कर, ग्वालियर पृ0 246
4) मधुरलता भटनागर कृत 'भारतीय संगीत का सौन्दर्य–विधान' प्रकाशक, हिन्दी कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली पृ0 147
5) सुधाकलश कृत 'संगीतोपनिषद्–सारोद्धार' अनुवादक– उमाकान्त प्रेमानन्दशाह, प्रकाशक– ओरियन्टल् इन्स्टीट्यूट, बड़ौदा ,अध्याय 2
6) प्रदीप कुमार दिक्षित नेहरंग कृत 'स'रस संगीत' प्रकाशक– किशोर विद्या निकेतन, भदैनी, वाराणसी पृ0 88
7) अरूण कुमार सेन कृत 'भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन' प्रकाशक, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल पृ0 52
8) मनोहर भालचन्द्रराव मराठे कृत 'ताल वाद्य–शास्त्र' प्रकाशक, शर्मा पुस्तक सदन, पाटनकर बाजार, लश्कर, ग्वालियर पृ0 246
9) वही पृ0 247